Answers to RHB/Set-1

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (ख) किसी को पराधीन करने की सोच न रखना।

(*ii*) (घ) भारत अन्य देशों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करता रहा है।

(*iii*) (ख) कथन और निष्कर्ष दोनों सही हैं।

(*iv*) विवेकानंद जी के भारतीय संस्कृति विषयक विचार इस प्रकार थे कि भारत द्वारा बेवजह कभी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया गया। विश्व के किसी भी देश को बंधक बनाए बिना अपने देश की विशाल संस्कृति, महानता, साहित्य और सद्गुणों को दूसरों में बाँटना ताकि वे भी उनसे लाभ उठाएँ।

(*v*) विवेकानंद जी ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा है कि भारत में सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। सभी एक दूसरे के धर्म का सम्मान करते हैं। सभी लोग प्रत्येक जाति व धर्म के त्योहारों का महत्व समझते हैं और उनमें प्रेमपूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

2. (*i*) (ख) डोमिंगो अष्टदिग्गज पेद्रेना का उत्तर सुनकर संतुष्ट नहीं हुआ।

(*ii*) (क) देश में भ्रमण करना

(*iii*) (घ) कथन (A) गलत है किंतु कारण (R) सही है।

(*iv*) जीवन का सबसे अनमोल पक्ष है– उसकी स्वतंत्रता। मनुष्य अपने जीवन में भले ही कितने भी भौतिक सुख-साधनों का उपभोग कर ले किंतु वास्तविक आनंद की अनुभूति स्वतंत्र होकर जीवन जीने में ही होती है।

(*v*) प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर महत्वपूर्ण जीवन मूल्य हैं–विद्वता, गूढ़ एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति तथा अनुभवजन्य ज्ञान। इन सभी जीवन मूल्यों के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन को सही मायनों में सफल बना सकता है।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) सर्वनाम पदबंध

(*ii*) जिस वाक्य में क्रियाविशेषण प्रमुख पद के रूप में प्रयुक्त होता है और क्रिया की विशेषता बताता है।
उदाहरण– मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा।

(*iii*) क्रिया पदबंध–शाबाशी देते

(*iv*) दोनों कबूतर–संज्ञा पदबंध
कारण–यह पद संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

(*v*) विशेषण पदबंध – एक दयालु
उदाहरण–सुलेमान एक दयालु राजा थे।

4. (*i*) लेखक हमेशा बड़े भाईसाहब के गुस्से और प्रवचनों से बचना चाहता था इसलिए उनकी नज़रों से बचता रहता था।

(*ii*) मिश्रित वाक्य

(*iii*) शैतान स्वयं को अभिमानवश ईश्वर का सबसे बढ़कर सच्चा भक्त मानता था।

(*iv*) सरल वाक्य – शैलेंद्र एक भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।
संयुक्त वाक्य – राजकपूर ने अपने अनन्य सहयोगी की फ़िल्म में बड़ी तन्मयता के साथ काम किया और वह भी किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा किए बगैर।

(*v*) संयुक्त वाक्य
कारण – दो वाक्यों के मध्य समुच्चय बोधक अव्यय 'और' का प्रयोग।

5. (*i*) समस्त पद– दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बना एक सार्थक एवं विशेष शब्द होता है।
समास-विग्रह – समस्त पद को अलग-अलग करके लिखा जाता है।

(*ii*) तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। उत्तरपद से ही अर्थ का पता चलता है जैसे– ग्रामवासी – ग्राम का वासी।

(*iii*) द्वंद्व समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों पद प्रधान होते हैं।
उदाहरण – 'आबोहवा–आब और हवा

(*iv*) 'अष्टाध्यायी' अर्थात 'आठ अध्यायों का समूह' में पहला पद संख्यावाची है। द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाची होता है।

(*v*) चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् विष्णु – बहुव्रीहि समास

6. (*i*) 'आड़े हाथों लेना'–प्रधानाचार्य ने देर से विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों को आड़े हाथों लिया।

(*ii*) 'बाट जोहना' – प्रतीक्षा करना
'आँखें चुराना' – किसी के सामने जाने से बचना/हिचकिचाना

(*iii*) आँखों में धूल झोंक

(*iv*) ठंडी पड़ी

(*v*) आजकल बड़े-बड़े बिल्डरों ने पेड़ों को काट-काटकर न जाने कितने पक्षियों को बेघर कर दिया है।

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (ग) 26 जनवरी 1931, स्वतंत्रता दिवस की पुनरावृत्ति की।

(*ii*) (ग) कंधे से कंधा मिलाकर चलना

(*iii*) (घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(*iv*) (घ) इस समय स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जानी थी।

(*v*) (ख) आमने-सामने की लड़ाई।

8. (*i*) लेखक के अनुसार मानव भूत और भविष्य के विषय में चिंता करते हुए स्वयं को उलझाए रखता है। जबकि ये दोनों ही काल मिथ्या हैं। मानव यह भूल जाता है कि वर्तमान ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। मनुष्य अपने आनंदमय क्षणों को भी चिंता की भेंट चढ़ा देता है। अतः हमें केवल वर्तमान में जीना चाहिए। वही सबसे बड़ा सत्य है।

(*ii*) पाठ में इस बात का वर्णन मिलता है कि कलकत्ता ने अपने ऊपर लगे हुए कलंक को धोने के लिए (गांधीजी की दांडी यात्रा में 1930 में सहयोग न दे पाना) सुभाष बाबू ने स्वतंत्रता दिवस की पुनरावृत्ति के उपलक्ष्य में इस आंदोलन का नेतृत्व किया और अंग्रेजों को दिखा दिया कि भारतीयों में एकता, अखंडता तथा देश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है जिसके लिए उन्होंने लाठियाँ भी खायीं और खून भी बहाया।

(*iii*) नहीं, यह अंधविश्वास नहीं है। हमारे पूर्वज प्रकृति के प्रत्येक उपादान को मानव जीवन के लिए एक वरदान मानते थे। उनकी मान्यता थी कि चाहे दरिया हो, अथवा साधारण-सा दिखने वाला मुर्गा सभी का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण योगदान है। दरिया से उठने वाली भाप हमें पानी देती है तो मुर्गा हमें घड़ी के अलार्म की तरह सवेरे उठाने का कार्य करता है।
मानवता के दो उदाहरण–शेख अयाज़ के पिता द्वारा चींटे को वापस कुएँ पर छोड़कर आना तथा लेखक की माता जी द्वारा कबूतर का अंडा टूट जाने पर नमाज़ें पढ़ना, रोज़ा रखना, अल्लाह से माफ़ी माँगना।

(*iv*) 'दीवार हमगोश दारद, तन्हाई।' – यह वाक्य वज़ीर अली ने कर्नल से एकांत में बात करने के लिए कहा क्योंकि वज़ीर अली किसी के सामने बात नहीं करना चाहता था। यह एक प्रकार की फ़ारसी कहावत है जिसका अर्थ है– दीवारों के भी कान होते हैं।

9. (*i*) (ग) ईश्वर में विश्वास न रखने वाला और अधीर होने वाला दुर्भाग्यशाली है।

(*ii*) (ग) शरीर अमर है जबकि आत्मा नश्वर है।

(*iii*) (क) भोजन का थाल देना

(*iv*) (ग) मद अर्थात धन के अहंकार में अंधा नहीं होना चाहिए।

(*v*) (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

10. (*i*) कबीर के अनुसार ईश्वर से वियोग मनुष्य के दुःख का कारण है। यह पीड़ा ऐसी होती है जैसे समस्त शरीर में सर्प का विष चढ़ गया हो जो किसी भी मंत्र या उपाय से ठीक नहीं हो सकता। ईश्वर के विरह की व्यथा बड़ी ही मार्मिक होती है।

(*ii*) कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में वर्णित प्रकृति के मानवीय क्रियाकलाप हैं—झरनों का पर्वतों की महानता को व्यक्त करते हुए ऊर्जस्वी गीत गाना। दूसरा, बादलों के छा जाने से नीले आसमान का धरती पर आक्रमण करना अर्थात् एकदम वेग से बादलों का फट जाना।

प्रकृति का पल-पल रूप बदलना, कविता में प्रयुक्त सजीवता और मानवोचित क्रियाएँ मन को प्रभावित करते हुए आँखों के आगे एक शब्द-चित्र का निर्माण करती हैं।

(*iii*) तोप शक्ति का प्रतीक है। अंग्रेजों ने भारतीयों के स्वतंत्रता संघर्ष को दबाने के लिए उनके विरुद्ध तोप का प्रयोग किया था। कवि के अनुसार भले ही कोई कितना ही शक्तिशाली (तोप) क्यों न हो एक न एक दिन वह शक्तिविहीन होता ही है क्योंकि सबसे बड़ी शक्ति तो समय है। अतः शक्तिशाली तोप भी अब केवल प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है।

(*iv*) कविता 'कर चले हम फ़िदा' तथा 'तोप' के मध्य एक अंतर – 'कर चले हम फ़िदा' एक गीत है जिसको भारत-चीन युद्ध पर आधारित 1964 में बनी फ़िल्म हकीकत में फ़िल्माया गया था। यह एक प्रेरक गीत है जो युवाओं को देश पर कुर्बान होने के लिए प्रेरित करता है जबकि 'तोप' एक व्यंग्यात्मक कविता है जिसमें कवि अंग्रेजों की निर्दयता और शक्ति का प्रतीक तोप के शक्तिहीन होने की बात कहते हैं। एक समानता - दोनों ही कविताएँ स्वतंत्रता के लिए अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए किए गए संघर्ष की बात कहती हैं।

11. (*i*) 'हरिहर काका' पाठ में धार्मिक हस्तक्षेप बिलकुल भी उचित नहीं था क्योंकि धर्म का कार्य केवल आध्यात्मिकता का प्रचार एवं प्रसार करना है न कि स्वार्थ में फंसकर दूसरों को नुकसान पहुँचाना। यह धर्म के नाम पर केवल अधर्म का कृत्य था जैसा कि महंत ने अपने धूर्त सार्थियों के साथ मिलकर हरिहर काका की ज़मीन को जबरन हथियाने का प्रयास किया।

गाँव में भूमि के बँटवारे को लेकर गांव के लोग तीन खेमों में बँट गए थे। पहला जो यह चाहता था कि हरिहर काका जमीन महंत के नाम कर दें। दूसरा पक्ष यह चाहता था कि जमीन हरिहर काका के भाइयों को ही मिलनी चाहिए और तीसरा पक्ष भी था जिसमें गाँव के एक समाज सेवक यह चाहते थे कि हरिहर काका के नाम से गाँव में एक विद्यालय खोला जाए।

(*ii*) पाठ 'सपनों के-से दिन' बचपन की स्मृतियों का एक ऐसा बाइस्कोप है जो हमें एक बार फिर से उन धुंधले और प्रकाशित कोनों में ले जाकार रोमांचित करता है।

यह पाठ पाठक को उनके बचपन के दिनों में ले जाता है। पाठ में जो अंश मुझे अच्छे लगे उनमें ग्रीष्मावकाश के दिनों में नानी के घर जाना, दिए गए गृहकार्य के सवालों को गिनना और बचे हुए ग्रीष्मावकाश के दिनों को गिनना तथा स्काउट की परेड के समय लेफ्ट राइट करना और विद्यालय के बगीचे से फूलों को तोड़कर अपनी जेब में रख लेना आदि हैं।

(*iii*) टोपी की पीड़ा थी कि घर में बहुत से लोग होने पर भी उसको कोई नहीं समझता था। किसी की भी गलती के लिए पिताजी टोपी को ही दंड दिया करते थे। इफ़्फ़न टोपी की ही भाँति निश्छल था इसलिए दोनों के भीतर की स्नेह प्राप्ति की इच्छा ने उन्हें एक दूसरे का मित्र बना दिया था।

बाल-मनोविज्ञान के आधार पर ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भीतर से दोनों ही अधूरे थे। दोनों को ही समझने वाला कोई नहीं था।

इफ़्फ़न के जाने के बाद ठाकुर हरिनाम सिंह के बच्चों से टोपी की मित्रता नहीं हो पायी क्योंकि वे बच्चे स्वभाव से ही घमंडी और निष्ठुर स्वभाव के थे। उन्हें इस बात का अहंकार था कि उनके पिता कलक्टर हैं और वे अंग्रेजी बोलते हैं। आरंभ में ही जब टोपी उनसे मित्रता करने गया तो उन्होंने उस पर अपना कुत्ता छोड़ दिया और उसको अपमानित किया।

खंड-'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (*i*) **पाठ्यक्रम में नवाचार (डिजिटल साक्षरता)**

पाठ्यक्रम में नवाचार का अर्थ है—नई-नई विधियों एवं तरीकों को अपनाना। वर्तमान युग 21वीं सदी से आगे जा रहा है, जिसके लिए शिक्षा में नए पाठ्यक्रम और नई विधियों की आवश्यकता पड़ेगी। इस दृष्टि से वैश्विक स्तर पर किसी भी विद्यार्थी को सफल बनाने के लिए बहुत से ऐसे माध्यमों की आवश्यकता है जो कि उसके लिए सदी के साथ कदम से कदम मिलाने में सहायक सिद्ध हो सकें। इसके साथ ही वह अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी एक पहचान बना सके। इस संदर्भ में 'डिजिटल साक्षरता' का होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। 'डिजिटल साक्षरता' का अर्थ है - इलेक्ट्रॉनिक के वे माध्यम जिनके कारण विद्यार्थी ऑनलाइन विधियों के साथ-साथ कंप्यूटरीकृत विधियों को भी अपना सकेगा। इसमें चैट जीपीटी, कृत्रिम बौद्धिकता ऐसे ही कुछ नए नवाचार हैं। इसके साथ-साथ पाठ्यक्रम में लाया गया बदलाव 'नई शिक्षा प्रणाली' के अंतर्गत नए संदर्भों को जोड़ने और उनको क्रियान्वित करने का एक बेहतर मार्ग है। शिक्षा में कक्षा छठी से ही जो नई विधियाँ शामिल की गई हैं उनमें व्यावसायिक शिक्षण के अंतर्गत बच्चों को कोडिंग जैसे शिक्षण एवं प्रशिक्षण के माध्यम से बेहतर बनाना है ताकि वे अपने आने वाले समय में अपने लिए नए स्टार्टअप शुरू कर सकें। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम में नवाचार विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का वैश्विक स्तर पर एक श्रेष्ठ स्थान तो होगा ही साथ ही विद्यार्थी को एक सुदृढ़ व्यक्तित्व भी प्रदान होगा।

(*ii*) **सतत विकास के लक्ष्य**

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपने सदस्य देशों के साथ 17 ऐसे विकास के लक्ष्यों को चुना गया जिनके आधार पर भविष्य की तैयारी करना तो था ही साथ ही वर्तमान पीढ़ी की ज़रूरत को पूरा करना भी था। इन लक्ष्यों में जहाँ एक ओर विश्व में फैली हुई गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन जैसे मुद्दों को लेकर कारगर कदम उठाने जैसे बिंदुओं को निर्धारित किया गया वहीं संसार में शांति, न्याय व्यवस्था के साथ-साथ शहरी और ग्रामीण जीवन को भी सुदृढ़ बनाना था। इसके लिए एक ऐसे लचीले बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता थी जिसमें औद्योगीकरण की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। जलवायु परिवर्तन से जहाँ विश्व का प्रत्येक देश जूझ रहा था, उसके लिए भी उचित कारगर कदम उठाना भी एक लक्ष्य था। थलीय, जलीय प्राणी इन सब की सुरक्षा और संरक्षण का मुददा भी एक महत्वपूर्ण कदम था। भारत के लिए ये लक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत एक विकासशील देश है और इसके लिए भारत को विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने के लिए इन सब लक्ष्यों को बहुत ही गंभीरता से क्रियान्वित करना है। अंततः यही कहा जा सकता है कि यदि इन विकास के लक्ष्यों को प्रत्येक सरकार गंभीरतापूर्वक क्रियान्वित करेगी तो विश्व में होने वाले आर्थिक उतार-चढ़ाव, जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ गरीबी, भुखमरी जैसी समस्याओं से निपटा जा सकेगा और सभी को पूर्ण रूप से समानता, शिक्षा, न्याय आदि का बंटवारा समान रूप से किया जा सकेगा जो कि प्रत्येक देश की स्वतंत्रता, अखंडता, एकता तथा चहुँमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

(*iii*) **ओलंपिक लक्ष्य एवं तैयारी**

ओलंपिक खेलों का इतिहास यूनानी सभ्यता से जुड़ा हुआ है। ओलंपिया पर्वत पर खेले जाने के कारण इन खेलों का नाम ओलंपिक पड़ा। अपने जीवन काल में प्रत्येक खिलाड़ी यह पदक जीतना चाहता है। भारत सरकार द्वारा 2014 में एक पहल की गई जिसके अंतर्गत ओलंपिक खेलों में भारत के अच्छे प्रदर्शन के सपने को साकार करने के लिए एक ऐसी योजना बनाई गई जिसके अंतर्गत खिलाड़ियों को मिशन ओलंपिक के अंतर्गत कुछ ऐसी सुविधाएँ दी गई जिससे वे ओलंपिक के लिए अच्छी तैयारी कर सकें। इस योजना का नाम है-'टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना'। इससे बहुत से खिलाड़ियों को फ़ायदा हुआ। इस योजना के अंतर्गत चुने गए खिलाड़ियों के लिए कुछ ऐसे कार्यक्रमों को मंजूरी दी गई जिससे वे अपने खेल की तैयारी अच्छे से कर सकते हैं। ओलंपिक की विशेष तैयारी हेतु वित्तीय सहायता, अच्छे कोच और सुव्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि जिन भी सुविधाओं की जरूरत होती है वह सब खिलाड़ी को प्रदान किया जाता है। इस योजना से 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत ने 1 रजत, 5 कांस्य पदक जीतकर अपने आप को साबित किया।

13. परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांकः 20.06.20xx
सेवा में
संपादक महोदय
अमर उजाला
नई दिल्ली
विषयः राष्ट्र के लोगों को शांति बनाए रखने का संदेश देने हेतु।
महोदय
मैं रोहिणी, दिल्ली की निवासी हूँ। मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र की नियमित पाठक हूँ। आप तो जानते ही हैं कि विश्व में आज चारों ओर से युद्ध और आपसी झगड़ों की खबरें आए दिन प्राप्त होती रहती हैं। जिससे आमजन भयभीत एवं अशांत दिखाई देता है। मैं इस संदर्भ में आपके समाचार-पत्र के माध्यम से राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करना चाहती हूँ।
सभी राष्ट्रों के शक्ति-प्रदर्शन के कारण आज युद्ध होना आम बात हो गई है जिससे मानवता संकट में पड़ गई है। चाहे वह इज़राइल या फिलिस्तीन का युद्ध हो अथवा यूक्रेन के साथ रूस का। संकट में तो धरती के प्राणी और जलवायु ही हैं। ऐसे में राष्ट्र की सरकारों और सभी नागरिकों को धैर्य और शांति बनाए रखने के लिए एक-दूसरे के साथ मानवीय व्यवहार करना चाहिए।
मैं आशा करती हूँ कि मेरा यह संदेश वैश्विक स्तर पर शांतिपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध होगा।
सधन्यवाद
भवदीया
साध्वी शर्मा

अथवा

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 02 सितंबर, 20xx
सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
क०ख०ग० विद्यालय, रोहिणी
नई दिल्ली
विषयः 'मेक इन इंडिया' पर आधारित कार्यशाला के आयोजन हेतु।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा बारहवीं की छात्रा प्रियंका हूँ। आप तो जानते ही हैं कि यह वर्ष हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। हम कक्षा बारहवीं के विद्यार्थी आपसे निवेदन करते हैं कि भविष्य के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं मार्ग दर्शन हेतु आप हमें नीति आयोग द्वारा 'मेक इन इंडिया' पर आधारित कार्यशाला का आयोजन करवाने की अनुमति प्रदान करें। इससे कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थी जहाँ अभी से बारहवीं के बाद अपने स्टार्ट-अप आदि के विषय में शिक्षित हो सकेंगे वहीं कक्षा बारहवीं के विद्यार्थियों को अपने व्यावसायिक मार्ग एवं पाठ्यक्रम चुनने में सहायता प्राप्त हो सकेगी।
आशा करती हूँ कि आप हमारी अपेक्षाओं को समझते हुए इस कार्यशाला के आयोजन की अनुमति प्रदान करेंगे।
धन्यवाद
भवदीया
प्रियंका
कक्षा – बारहवीं

14.

अ०ब०स० विद्यालय, देहरादून

सूचना

निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

दिनांक : 03 सिंतबर, 20xx

सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में एक निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आप सभी सादर आमंत्रित हैं। कार्यक्रम की जानकारी इस प्रकार से है–

तिथिः 06 सितंबर, 20xx

आकर्षणः नुक्कड़ नाटक

प्रधानाचार्य

अथवा

भाषा क्लब, पूर्वांचल

सूचना

'अपनी भाषा अपनी पहचान' कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक : 08 सिंतबर, 20xx

पूर्वांचल के सभी साहित्यकारों को सूचित किया जाता है कि हमारे पूर्वांचल भाषा क्लब द्वारा 'भारतीय भाषा उत्सव' कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए 'अपनी भाषा अपनी पहचान' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। आप सभी इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित हैं। इस कार्यक्रम की जानकारी इस प्रकार से है–

तिथिः 16 सितंबर, 20xx (शनिवार)

आकर्षणः पूर्वांचल भाषिक संगोष्ठी (विशिष्ट साहित्यकार)

अध्यक्ष

पूर्वांचल भाषा क्लब

15.

जब घर-घर तिरंगा लहराएगा।

देश का हर एक बच्चा, सच्चा भारतीय कहलाएगा॥

देश का गौरव मान है झंडा
सैनिक का अरमान तिरंगा
बलिदानी की शान तिरंगा
है किसान की मुसकान तिरंगा
शांति अहिंसा ऐक्य भाव का
भारतवासी लहरायें तिरंगा

भारत सरकार की ओर से जनहित में जारी

अथवा

जब 'स्वास्तिक' हो शहर में तो फैशन की चिंता क्यों!!

हर उम्र के लिए

5000 की खरीद पर विशेष उपहार

'स्वास्तिक' फैशन परिधान कंपनी, गुरुग्राम (हरियाणा) **संपर्क करें–9801xxxxxx**

16. एक बार सोना नाम का एक लड़का जंगल से जा रहा था। रास्ते में उसे रोशनी दिखाई दी। इतने घने जंगल में रोशनी देखकर वह हैरान हो गया। वह उस रोशनी की ओर कदम बढ़ाने लगा। आगे जाकर उसने देखा कि पत्थर पर पड़ा एक छोटा-सा मोती बहुत चमक रहा है। वह मन ही मन सोचता है कि काश! बहुत सारे मोती होते तो कितना अच्छा होता। वह अभी यह सोच ही रहा था कि मोती धीरे-धीरे करके बढ़ने लगते हैं और उनका एक पहाड़ बन जाता है। अब वह घबरा जाता है। वह कहता है, इससे तो एक ही मोती अच्छा था उसको कम से कम मैं अपनी जेब में तो रख लेता। उसके ऐसा सोचते ही मोती वापस एक हो जाता है। वह मोती लेकर खुशी-खुशी अपने घर की ओर जाता है जैसे कि आज उसे कोई जादुई शक्ति मिली है। वह अपनी माँ से कहता है कि आज मुझे जंगल में एक जादुई मोती मिला है। माँ लालच में उसके हाथ से मोती छीन लेती है और कहती है कि देखूँ उसकी जादुई शक्ति क्या है। वह कहती है कि हमारी इस टूटी-फूटी झोपड़ी को एक बहुत बड़े महल में बदल दो। वह अभी यह बात पूरी भी नहीं कर पाती कि उसकी छोटी-सी झोपड़ी महल में बदल जाती है। अब उसके मन में और लालच आ जाता है वह कहती है कि मेरे आगे सुंदर-सुंदर पकवान रखे जाएँ। अब उन पकवानों की संख्या बढ़ने लगती है क्योंकि उसने यह तो कहा नहीं था कि उसको कितने पकवान चाहिए। अब वह परेशान हो जाती है क्योंकि पकवान प्रकट होते ही जा रहे थे। अंत में दुखी होकर वह कहती है कि इससे तो अच्छा होता है कि मैं कोई पकवान माँगती ही नहीं। अब सारे पकवान गायब हो जाते हैं। इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें अपने मन में लालच रूपी विकार उत्पन्न नहीं करना चाहिए बल्कि प्रत्येक कार्य को धीरे-धीरे ध्यान से और समझ कर करना चाहिए ताकि हम उसका लाभ प्राप्त कर सकें।

अथवा

प्रेषक	abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता	pqr@sbibank.com
प्रतिलिपि(सीसी)	xyz@sbibank.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी)	mno@sbi.com

विषयः एटीएम से दो हजार रुपये नहीं निकले लेकिन धनराशि कटने का संदेश प्राप्त हुआ।

अधिकारी महोदय

नमस्कार

सविनय मैं आपका ध्यान अपनी समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैंने मंगोलपुरी ब्लाक-एन के एसबीआई बैंक के एटीएम से 2000 रुपये निकाले किंतु धनराशि नहीं निकली जबकि पैसे निकालने और खाते में से कम होने का संदेश प्राप्त हुआ। मैंने वहाँ कुछ देर प्रतीक्षा भी की कि कहीं मशीन से कुछ देरी से राशि बाहर आए। किंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

आपसे निवेदन है कि मेरी समस्या का संज्ञान लेते हुए शीघ्रातिशीघ्र निदान कीजिए।

सधन्यवाद

खाता संख्या - 000xxx53

भवदीय

क०ख०ग०